परिवार में व्यवस्था

संबंध को समझना

—न्याय

परिवार में व्यवस्था

1. संबंध है– मैं का मैं से
2. संबंध में भाव है– एक मैं की दूसरे मैं के प्रति
3. इन भावों को पहचाना जा सकता है– निश्चित हैं 9
4. इन भावों के निर्वाह एवं मूल्यांकन से उभय सुख होता है।

भावः–

1. विश्वास Trust आधार मूल्य
2.. सम्मान Respect
3. स्नेह Affection
4. ममता Care
5. वात्सल्य Guidance
6. श्रद्धा Reverence
7. गौरव Glory
8. कृतज्ञता Gratitude
9. प्रेम Love पूर्ण मूल्य

Affection (स्नेह)

The feeling of being related to the other

(acceptance of the other as one's relative)

दूसरे को संबंधी के रूप में स्वीकारने का भाव।

विश्वास एवं सम्मान के भाव के साथ हम दूसरे मनुष्य को संबंधी की तरह स्वीकारते हैं।

परस्परपूरकता के लिए जिम्मेदारी एवं निष्ठा

स्नेह का अभाव – विरोध/द्वेष/ईर्ष्या

Absence of Affection = Opposition, Jealousy

Care (ममता)

Feeling of responsibility toward the body of my relative

संबंधी के शरीर के प्रति जिम्मेदारी का भाव।

The responsibility & commitment for **nurturing** and **protecting** the Body of my relative

संबंधी के शरीर के पोषण, संरक्षण की स्वीकृति का भाव।

Guidance (वात्सल्य)

Feeling of responsibility toward the self(I) of my relative

संबंधी के मैं के प्रति जिम्मेदारी का भाव।

The responsibility & commitment for ensuring **Right Understanding** and **Right Feeling** in the self(I) of my relative

संबंधी को समझदार व जिम्मेदार बनाने की स्वीकृति का भाव।

ममता एवं वात्सल्य स्नेह के सहज प्रतिफल हैं।

क्या हम आज ममता एवं वात्सल्य दोनों को सुनिश्चित कर रहे हैं?

या हम अधिकांश समय सिर्फ ममता का ध्यान रखते हैं।

क्या हम शरीर का ध्यान रखते समय वात्सल्य का भी ध्यान रखते हैं?

उदाहरण:—बच्चों को खाना खिलाना

Reverence (श्रद्धा)

The feeling of acceptance for Excellence

श्रेष्ठता की स्वीकृति का भाव।

Excellence (श्रेष्ठता)

व्यवस्था को समझना एवं

व्यवस्था पूर्वक जीना

सभी चार स्तर पर

1. मानव के रूप में
2. परिवार में
3. समाज में
4. प्रकृति/अस्तित्व में

श्रेष्ठता एवं प्रतिस्पर्धा भिन्न हैं।

श्रेष्ठता में हम दूसरे को भी अपने जैसा बनाने का प्रयास करते हैं।

प्रतिस्पर्धा में हम दूसरे को अपने जैसा होने से रोकते हैं।

Worship (पूजा)

Effort made to achieve excellence. श्रेष्ठता के लिए किया गया प्रयास।

(श्रद्धेय से प्राप्त प्रेरणा की स्वीकृति)

Excellence (श्रेष्ठता)

दूसरा मेरे जैसा है – पूरकता

दूसरों को अपने जैसा बनने में सहयोग करते हैं।

सहज स्वीकृति पर आधारित (व्यवस्था में भागीदारी)

संबंध में विश्वास, सम्मान .... का भाव

समृद्ध

निश्चित एवं निरपेक्ष

To Be Special (विशेषता)

दूसरा मेरे जैसा नहीं है – मैं खास हूँ।

भेद को बनाए रखना चाहते हैं

मान्यताओं पर आधारित भय–प्रलोभन

स्वयं का अधिमूल्यन एवं दूसरे का अवमूल्यन

दरिद्र

सापेक्ष एवं अनिश्चित

Glory (गौरव)

Feeling for those who have made effort for excellence

जिन्होंने श्रेष्ठता के लिए किए प्रयास किया है, उनके प्रति भाव।

Gratitude (कृतज्ञता)

Feeling for those who have made effort for my excellence

जिन्होंने मेरी श्रेष्ठता के लिए प्रयास किया उनके प्रति भाव।

Feeling in Relationship

1. Trust विश्वास – आधार मूल्य
2. Respect सम्मान
3. Affection स्नेह
4. Care ममता
5. Guidance वात्सल्य
6. Reverence श्रद्धा
7. Glory गौरव
8. Gratitude कृतज्ञता
9. Love प्रेम – पूर्ण मूल्य

अपनी सहज स्वीकृति के आधार पर जाँच कर देखें–

हम संबंधपूर्वक जीना चाहते हैं:

- X किसी के साथ नहीं → विरोध
- √ एक के साथ → } स्नेह
- √ अनेक के साथ → }
- √ हरेक के साथ → } प्रेम

Affection (स्नेह) – The feeling of being related to the other (acceptance of the other as one's relative)

दूसरे को संबंधी के रूप में स्वीकारने का भाव।

Love (प्रेम) – The feeling of being related to all (Complete Value)

= हर एक को संबंधी के रूप में स्वीकारने का भाव।

Love (प्रेम)

Love (प्रेम) – The feeling of being related to all (Complete Value)

= हर एक को संबंधी के रूप में स्वीकारने का भाव।

= पूर्णता में रति – पूर्णता में रत होना – हर एक के साथ संबंध में निहित रस (भावों) की अनुभूति करना।

इसकी शुरूआत एक–एक को संबंधी के रूप में स्वीकारने से होती है(Affection - स्नेह) एवं धीरे–धीरे हम हर मनुष्य को अपने संबंधी के रूप में देख पाते हैं (Love - प्रेम) , फिर हम अस्तित्व की हर इकाई के साथ अपने संबंध को देख पाते हैं।

एक ⟶ अनेक ⟶ हर एक को संबंधी के रूप में स्वीकारना

प्रेम का भाव हर इकाई के लिए होता हैं। परस्परता में जिनके साथ हम निर्वाह कर रहे होते हैं, वहां kindness (दया), beneficience (कृपा) & compassion (करुणा) के रूप में यह अभिव्यक्त होती है।

प्रेम का भाव (की मानसिकता) अखण्ड समाज का आधार है।

जाँचे –

संबंध में क्या वरीय है

– भाव

– सुविधा (भौतिक रासायनिक वस्तु)

परस्परता में भाव के निर्वाह में सुविधा की क्या भूमिका है

संबंध में क्या सहज स्वीकार (परस्परपूरक) है :–

1. दूसरे से भाव पाने की अपेक्षा करना
2. जिम्मेदारीपूर्वक संबंध को समझना, सही भाव को स्वयं में सुनिश्चित करना एवं परस्परता में उनका निर्वाह करना

परिवार में व्यवस्था – न्याय – परिवार से विश्व परिवार तक (अखण्ड समाज)

1. संबंध है– मैं का मैं से – स्वीकृति की निरंतरता, बिना किसी शर्त के
2. संबंध में भाव है– एक मैं की दूसरे मैं के प्रति
3. इन भावों को पहचाना जा सकता है– निश्चित हैं 9 – स्वयं में इन भावों की सुनिश्चितता – निरंतरता, बिना किसी शर्त के
4. इन भावों के निर्वाह एवं मूल्यांकन से उभय सुख होता है – संबंध में जिम्मेदारीपूर्वक सभी भावों का निर्वाह (बिना दूसरे से प्रभावित हुए/बिना प्रतिक्रिया किये)

संबंध में भाव:

1. विश्वास Trust आधार मूल्य
2.. सम्मान Respect
3. स्नेह Affection
4. ममता Care
5. वात्सल्य Guidance
6. श्रद्धा Reverence
7. गौरव Glory
8. कृतज्ञता Gratitude
9. प्रेम Love पूर्ण मूल्य

न्याय = मानव–मानव संबंध की पहचान, निर्वाह, मूल्यांकन, उभय सुख

सहज स्वीकृति न्याय के लिए – परिवार से विश्व परिवार तक

सहज स्वीकृति अखण्ड समाज के लिए